पाठ 16. श्रेष्ठ कौन

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को यह समझाना है कि सही अर्थों में श्रेष्ठ किसे माना जाता है। जो व्यक्ति हिंसा को प्रेम से, बुराई को अच्छाई से जीतने का प्रयास करता है, वही श्रेष्ठ कहलाता है। इस पाठ द्वारा बच्चे सही-गलत का भेद करना सीख पाएँगे।

पाठ का सारांश

काशी नरेश अपनी प्रजा का बहुत ध्यान रखते थे। राज्य के सभी लोग उनके गुणों की प्रशंसा करते थे। एक दिन काशी नरेश राज्य के भ्रमण पर प्रजा से अपने दोषों एवं अवगुणों के बारे में जानने के लिए निकले। पर राज्य में किसी से भी उन्हें अपने अवगुणों के बारे में पता न चला। सभी ने उनके गुणों का ही बखान किया। हारकर वे महल की ओर वापस लौटे। काशी नरेश की तरह ही कौसल नरेश भी राज्य में घूम-घूमकर अपने दोष ढूँढ़ने निकले। पर वे भी निराश होकर अपने महल की ओर लौट चले। लौटते समय रास्ते में दोनों नरेश एक ढालू जगह पर जा मिले। दोनों नरेशों के रथ एक-दूसरे के सामने थे। दोनों के सारथियों में से कोई भी अपना रथ पीछे नहीं करना चाहता था। सारथियों ने उपाय निकाला कि जिनका राजा श्रेष्ठ होगा उन्हीं का रथ आगे जाएगा। कई तरह के प्रश्नों द्वारा भी यह निर्णय न हो सका। फिर काशी नरेश के सारथी ने कहा, राजा के चरित्र एवं व्यवहार से इस बात का निर्णय होगा। कौसल नरेश के सारथी ने कहा, उनके राजा बड़े अच्छे चरित्र के हैं। वे कठोर लोगों के प्रति कठोरता का, सज्जनों के साथ सज्जनता का, कोमल लोगों के साथ कोमलता से व्यवहार करते हैं। काशी नरेश के सारथी ने कहा कि उनके राजा क्रोधी को प्रेम से, दुष्ट को सज्जनता से, कंजूस को दानवीरता से तथा झूठ को सच के बल पर जीतने का प्रयास करते हैं। सारथी की बात सुन कौसल नरेश तथा उनके सारथी ने काशी नरेश की श्रेष्ठता की प्रशंसा करते हुए उन्हें आगे बढ़ने का मार्ग दे दिया।

अध्यापन संकेत

पाठ का आदर्श वाचन करें। बच्चों से भी पाठ का एक-एक अंश पढ़वाएँ। बच्चों से पूछें, यदि कक्षा में कोई उन्हें परेशान करता है तो वे क्या करते हैं? अध्यापक/अध्यापिका को बताते हैं या वे स्वयं भी उसे परेशान करते हैं अथवा उसकी बातों पर कोई ध्यान न देकर उसे अनदेखा कर देते हैं।

- पाठ में उभारे गए जीवन-मूल्यों को बच्चों में विकसित करें। उन्हें समझाएँ, यदि कोई तुम्हें परेशान करे, तो बदले में हमें भी वैसा ही व्यवहार नहीं करना चाहिए। इस तरह समस्या का समाधान नहीं निकलता अपितु झगड़ा और भी बढ़ जाता है।
- बच्चों को गांधी जी का अहिंसा का मार्ग बताएँ–यदि तुम्हारे एक गाल पर कोई थप्पड़ मारे तो अपना दूसरा गाल भी उसके आगे कर दो। इससे उसे गलती का बोध अवश्य होगा।
- पाठ का मूल भाव बच्चों को समझाएँ। पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ।
- बच्चों से पूछें, उनकी दृष्टि में श्रेष्ठ व्यक्ति कौन होता है। (बच्चों को अभिव्यक्ति का अवश्य दें।)

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।